विस्मृत किया जा सकता है। नारी हृदय के कोमल भावों के उद्घाटन का जैसा सामर्थ्य कजरी गीतों में है, अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।

'धीरे धीरे बरसो बदरिया सजन घर नहीं आयो रे रामा।' आदि लोकगीतों में परदेस गए पिया की याद में दुखी विरहिणी बदरिया से धीरे बरसने की चिरौरी करती है। अपनी सखी से अपने हृदय की व्यथा वह इन शब्दों में कहती है–

सावन हे सखी सगरो सुहावन
रिमझिम बरसेला मेघ रे
सबके बलमउवा घर अइलन
हमरो बलम परदेस रे।

कजरी की इन पंक्तियों में वियोग की पीड़ा बढ़ाने वाली बारिश की बूंदों को उलाहना देती विरहिणी पत्नी के हृदय का क्रंदन मुखरित हुआ है। सावन में विवाहित बेटियां अपने मायके आती हैं और अपनी सखियों के साथ झूले पर झूलती बूंदों की

सरगम पर झूमती हैं। सावन मायके में सखियो के संग बिताने की आस लिए, बाबुल को ससुराल लिवाने आने की प्रार्थना करती बिटिया के भावों को सुप्रसिद्ध शायर अमीर खुसरो ने इस प्रकार शब्दबद्ध किया है..

अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी कि सावन आया

भारत अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर भी कजरी के आकर्षण में बंध कर लिखते हैं–

झूला किन डारो अमरेयां

कजरी गीतों में ननद और भाभी की चुहलबाजी मन को गुदगुदाती है–

वीरन भैया अइले अनवइया / सवनवा में ना जइबे ननदी।

हिडवलवा लागल हइ कदमवा / भौजी चलहु झूले ना
पियवा सावन में विदेशवा / ननदो हिडोलवा भावे ना।

इन्ही गीतों में विरह के बाद संयोग के सुखद क्षणों में अपने पिया से की गई पत्नी की अनूठी फरमाइशें भी है–

पिया मेहंदी लिआय दे मोती झील से।
धोती लइदे बलम कलकतिया
जिसमें हरी–हरी पत्तियां।

कजरी मूलत: वियोग की पीड़ा से उपजती है, कजरी गायन नारी हृदय के भावों से जुड़ा है। इस सृष्टि का निर्माण यदि ईश्वर ने किया है, तो इस सृष्टि को संवारा है नारी ने, हमारे घर को, हमारे परिवारों को, हमारी पीढ़ियों को संस्कार देने का कार्य हमारे घर और समाज की इन्हीं स्त्रियों द्वारा किया गया है। ये लोकगीत नारी हृदय की कोमल भावनाओं के उद्गार हैं। श्रावण मास में गाई जाने वाली 'कजली' अवध प्रदेश के ग्रामीण अंचल के प्रमुख ऋतुगीतों में से एक है। कजरी तीजपर्व भाद्रपद के कृष्णपक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। पूरे पूर्वांचल में बरसात भर 'कजरी' का गायन होता है। वर्तमान में आधुनिकता की दौड़ में डीजे की कानफोड़ू धुनों के बीच इन लोकगीतों की मिठास कहीं खोती जा रही है। जरूरत है इस धरोहर को बचाने की ताकि लोकजीवन की यह मिठास बनी रहे।